अदरक की खेती से प्राप्त करे लाभ

राजा भईया
शोध छात्र
(सब्जी विज्ञान विभाग)
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एंव प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

अदरक जिंजीबरेसी कुल का पौधा है। यह अधिकतर उष्ण कटिबंधीय (ट्रापिकल्स) और शीतोष्ण कटिबंध (सबट्रापिकल) भागों में पाया जाता है। भारत के अधिकांश राज्यों में अदरक की खेती की जाती है।

भारत में यह बंगाल, बिहार, चेन्नई, मध्यप्रदेश, कोचीन, पंजाब और उत्तर प्रदेश में अधिक रूप उगाइ जाती है। इसका उपयोग मुख्यतः मसाले के रूप में किया जाता है। भारत अदरक उत्पादन में विश्व के अग्रणी देशों में से एक है। जिनमें केरल और मेघालय प्रमुख राज्य हैं यह एक भूमिगत रूपान्तरित तना है। यह मिट्टी के अन्दर क्षैतिज बढ़ता है। इसमें काफी मात्रा में भोज्य पदार्थ संचित रहता है जिसके कारण यह फूलकर मोटा हो जाता है अदरक में प्रकंदो का प्रयोग किया जाता है

अदरक में आयरन केल्शियम, लोह, फास्फेट, आयोडीन, क्लोरिन, खनिज लवण तथा विटामिन की प्रचूर मात्रा होती है।

अक्सर सर्दियों में लोगों को खांसी-जुकाम की परेशानी हो जाती है, जिसमें अदरक प्रयोग बेहद ही कारगर माना जाता है। यह अरूची और हृदय रोगों में भी फायदेमंद है। इसके अलावा भी अदरक कई और बीमारियों के लिए भी फायदे मंद मानी गई है।

जलवायुः

अदरक के विकास के लिए पोषण एवं आद्रता पूर्ण जलवायु की आवश्यकता होती है इसके बोने के उपरांत मध्यम वर्षा होने से अंकुरण अच्छा होता है पौधों की वनस्पति वृद्धि के लिए अधिक वर्षा अच्छी रहती है और आवश्यकतानुसार सिंचाई भी करना आवश्यक है

भूमिः

अदरक सभी प्रकार की भूमियों में हो जाता है इसके लिए पी. एच 6 से 7 उपयुक्त होता है दोमट मृदा अदरक की खेती के लिए सर्वोत्तम है, इसकी खेती बालुई चिकनी लाल या लेटेराइट मिट्टी में उत्तम होती है। एक ही खेत में अदरक की फसल को लगातार नहीं बोना चाहिए। भूमि में जल निकासी का समुचित होना चाहिए

भूमि की तैयारीः

ग्रीष्मकालीन वर्षा होते ही खेत की तैयारी प्रारंभ कर देनी चाहिए भूमि की चार से पांच जुताई कर अच्छी भुरभुरी कर लेनी चाहिए बोने से 10 से 15 दिन पहले भूमि की तैयारी कर लेनी चाहिए उसके पश्चात 1 मीटर चौड़ी और 15 सैंटीमीटर ऊंची 25 सैंटीमीटर के उपरांत से क्यारियां बना लेनी चाहिए क्यारियों की लंबाई सुविधानुसार रखी जाती है

बोने का समयः

सामान्यता अदरक की बुवाई अप्रैल में की जाती है पर्वतीय क्षेत्रों में मई-जून में बोया जाता है दक्षिण भारत में आमतौर से बुवाई मई में की जाती है

बुआईः

अच्छी तरह परिरक्षित प्रकन्द को 25 से 30 सैंटीमीटर लम्बाई के 20 से 25 ग्राम के टुकड़े करके बीज बनाया जाता है। केरल में बीजों की दर 1500 से 1800 किलो ग्राम हेक्टेयर होती है। बीज प्रकन्द को 30 मिनट तक 3 ग्राम लीटर पानी मैंकोजेब से उपचारित करने के पश्चात 3 से 4 घंटे छायादार जगह में सुखाकर 20 से 25 सैंटीमीटर की दूरी पर बोते हैं। पंक्तियों की आपस में बीच की दूरी 20 से 25 से मीटर रखना चाहिए। बीज प्रकन्द के टुकड़ों को हल्के गढ्डे खोदकर उसमें रखकर खाद (एफ.वाई.एम. तथा मिट्टी डालकर समान्तर करना चाहिए।

बीज की दरः

1500 से 1800 किलोग्राम बीज प्रकंद प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता पड़ती है पर्वतीय क्षेत्रों में अपेक्षित अधिक बीज लगभग 2000 से 2500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर डालने से अधिक उपज प्राप्त होती है

बोने की विधिः

क्यारियों में पंक्तियों से बुवाई की जाती है पंक्ति से पंक्ति के बीच की दूरी 30 सैंटीमीटर तथा पौधे से पौधे का फासला 20 सैंटीमीटर रखना चाहिए बीजों को खुरपी या हैंड द्वारा 35 से 5 सैंटीमीटर गड्ढे में बोया जाता है यह हल द्वारा बनाए गए कुंडों में बोया जाता है तदोपरांत 20 प्रकंदो को ऊपरी मृदा तथा बारीक खाद के मिश्रण से 4 से 5 सैंटीमीटर ढक दिया जाता है

खाद एवं उर्वरकः

सामान्यतः अदरक के लिए अधिक पोषक खाद की आवश्यकता होती है लगभग 100 किलोग्राम नाइट्रोजन 50 किलोग्राम फास्फोरस तथा 50 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर पूर्ति करनी चाहिए

प्रजातियाँ:

भारत में अदरक की खेती के लिए विभिन्न क्षेत्रों के स्थानीय कल्टीवर्सो जैसे मारन कुरुप्पमपाडी एरनाड वारनाडू हिमाचल औरनदिया आदि का उपयोग करते हैं। स्थानीय कल्टीवर्स मेंरयो –डी–जिनेरियो बहुत लोक प्रिय कल्टिवर है।

अदरक की उन्नत प्रजातियाँ और उनके विशिष्ट गुण

क्र सं	प्रजाति	फ्रेश उपज	फसल अवधि	शुष्क उपज	रेशा	ओलिओरिसिन	एसनशियलओयल
1	आईआईएसआरवरदा	22.6	200	20.7	4.5	6.7	1.8
2	सुप्रभा	16.6	229	20.5	4.4	8.9	1.9
3	सुरुची	11.6	218	23.5	3.8	10.0	2.0
4	सुरभी	17.5	225	23.5	4.0	10.2	2.1

खेती की तैयारी के समय 25 से 30 टन के या कंपोस्ट प्रति हेक्टेयर मृदा में सुमिश्रित कर देनी चाहिए प्रत्येक बार उर्वरक डालने के बाद उसके ऊपर मिट्टी डालना चाहिए। जिंक की कमी वाली मिट्टी 6 कि ग्राम जिंक हेक्टेयर 30 कि ग्राम जिंक सल्फेट हेक्टेयर डालने से अच्छी उपज प्राप्त होती है।

मल्चिंग:

बोने के बाद खेत को लगभग 10 से 12 टन प्रति हेक्टेयर हरी पत्तियों से ढक देना चाहिए अर्थात खेत पर फैला देना चाहिए इससे अंकुरण अच्छा होता है तथा वर्षा से मृदा कटाव का बचाव होता है इसके बाद लगभग 5 से 6 टन पत्तिया होने के 40 दिन बाद तथा पुनः 90 दिन बाद मल्चिंग करना उपयोगी रहता है

सिंचाई:

प्रथम सिंचाई बोने के तुरंत बाद कर देनी चाहिए और अदरक की फसल वर्षा आधारित होती है आवश्यकतानुसार सिंचाई करने से उपज बढ़ती है

मिट्टी चढ़ाना:

पौधों पर मिट्टी चढ़ाने से प्रकंदो की वृद्धि अच्छी होती है पौधों को सहारा मिलता है तथा मृदा में वायु संचार बढ़ता है और खरपतवारो को भी निकाल देना चाहिए 2 बार मिट्टी चढ़ाना आवश्यक होता है प्रथम समय बोने के लगभग 50 दिन बाद तथा द्वितीय 75 दिन बाद मिट्टी चढ़ाना चाहिए खरपतवार पर नियंत्रण रखने के लिए खरपतवार नाशक 2 4 डी और एक किलोग्राम प्रति हेक्टेयर अतराजीन का प्रयोग करना भी लाभप्रद होता है अधिक वर्षा होने पर यदि खेत में जलभर जाता है तो उसकी निकासी कर देनी चाहिए

खुदाई:

बुआई के आठ महीने बाद जब पत्ते पीले रंग के हो जाये और धीरे–धीरे सूखने लगे तब फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती है। पौधों को सावधानी पूर्वक फावड़े या कुदाल की सहायता से उखड़ कर प्रकंदों को जड़ और मिट्टी से अलग कर लेते हैं। अदरक को सब्जी के रूप में उपयोग करने के लिए उसे छठवें महीने में ही खुदाई करके निकाल लेना चाहिए। प्रकन्दों को अच्छी तरह धोकर सूर्य के प्रकाश में कम से कम एक दिन सुखाकर उपयोग करना चाहिए। सुखा हुआ अदरक प्राप्त करने के लिए बुआई से आठ महीने बाद खुदाई करते हैं प्रकंदों को 6 से 7 घंटे तक पानी में डूबोकर उसको अच्छी तरह साफ करते हैं। पानी से निकालकर उसको बांस की लकड़ी से बा. हरी भाग को साफ करते हैं। अत्यधिक साफ करने से तेलों के कोशों को हानि पहुंचाते हैं। अतः प्रकन्द को सावधानी पूर्वक साफ करना चाहिए। छिले हुए प्रकन्द को धोने के बाद एक सप्ताह तक सूर्य के प्रकाश में सुखा लेते हैं। अदरक की उपज प्रजाति एवं क्षेत्र आधारित होती हैं जहाँ पर फसल उगाई जाती है।

कटाई:

अदरक की कटाई उसके प्रयोग के आधार पर किया जाता है

1. हरा अपरिपक्व अदरक:

बोने के पांच से छह माह बाद तैयार हो जाते हैं यह अवस्था मृदु रसेदार तंतु हीन प्रकंदो की होती है

2. हरा परिपक्व अदरक:

इस अवस्था में प्रकंद पूर्ण परिप. क्व और सख्त तथा तंतु युक्त होते हैं

3. शुष्क अदरक:

इस अवस्था में पत्तियां पीली हो जाती हैं तथा पौधे मुरझाने लगते हैं प्रकंद अधिक तंतु व सख्त हो जाते हैं छाल सख्त तथा तीखापन अधिक हो जाता है यह अवस्था मे बोने के 7 से 8 माह बाद होती है

अदरक की बीज:

इसके लिए प्रकंदो को 3 से 4 सप्ताह अधिक तक खेत में रहने देना चाहिए जिससे प्रकंद पूर्ण रूप से परिपक्व हो जाए तथा उनकी छाल सख्त हो जाए इस अवस्था में पौधे सूखकर भूमि पर गिर जाते हैं फावड़े व कुदाली से सावधानी पूर्वक खोद कर प्रकंदो को निकालना चाहिए प्रकंदो की जड़े सूखी पत्तियों तथा चिपकी मिट्टी से पृथक कर साफ कर लेना चाहिए

उपजः अच्छी फसल की 30 से 40 टन तक उपज प्रति हेक्टेयर हो जाती है सामान्यता फसल की 12 से 15 टन प्रति हेक्टेयर होती है